

# HINDI

(Maximum Marks : 100)

(Time allowed : Three hours)

(Candidates are allowed additional 15 minutes for only reading the paper.

They must NOT start writing during this time.)

Answer questions 1, 2 and 3 in Section A and four other questions from Section B  
on at least three of the prescribed textbooks.

The intended marks for questions or parts of questions are given in brackets [ ].

## SECTION A

### LANGUAGE - 50 Marks

1. Write a composition in approximately 400 words in Hindi on any ONE of the topics given below :—

[20]

किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए जो 400 शब्दों से कम न हो :—

- (i) आज की भागदौड़ भरी जिन्दगी में आदमी मानसिक तनाव से ग्रस्त है, इसे दूर करने तथा जीवन को खुशहाल बनाने के तरीकों के बारे में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
- (ii) 'कर्म ही प्रबल है, भाग्य नहीं' — इस कथन के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार प्रकट कीजिए।
- (iii) 'आज के भौतिकतावादी युग में त्योहारों का रूप-स्वरूप बदल रहा है। त्योहारों में व्यावसायिकता बढ़ती जा रही है।' इस तथ्य की विवेचना कीजिए।
- (iv) 'जीवन में सफलता पाने के लिए कठिन संघर्ष की आवश्यकता होती है' — इस कथन को अपने जीवन के किसी निजी अनुभव के द्वारा पुष्ट कीजिए।
- (v) 'नारी घर और बाहर दोनों जगह अपनी भूमिका निभाते हुए नित नई चुनौतियों का सामना करती है!' विभिन्न क्षेत्रों में नारी के योगदान को ध्यान में रखते हुए इस विषय पर अपने विचार लिखिए।
- (vi) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर मौलिक कहानी लिखिए :
  - (a) 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे'।
  - (b) एक ऐसी मौलिक कहानी लिखिए जिसका अन्तिम वाक्य हो :  
..... काश ! ऐसा पल मेरे जीवन में भी आया होता।।

This Paper consists of 5 printed pages and 1 blank page.

1218-805

© Copyright reserved.

Turn over

2. Read the passage given below carefully and answer in Hindi the questions that follow, using your own words :—

निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर, अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखिए :—

किसी नगर में एक नवयुवक रहता था जिसका नाम सुन्दर था। वह मेहनत करने से हमेशा बचता था। जब भी कोई काम उसके सामने आ जाता था जिसमें उसे मेहनत करनी हो, तो वह उस कार्य से दूर भागने लगता था। मेहनत को लेकर उसके मन में यह बात बैठ गयी थी कि वह कभी मेहनत नहीं कर सकता लेकिन उसके अंदर अच्छी बात यह थी कि वह अपने जीवन में सफल होना चाहता था। वह सोचता था क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो उसे सफलता का मंत्र दे सके।

इस प्रश्न को लेकर वह बहुत से लोगों और विद्वानों के पास गया। कोई कहता था कि माता-पिता की सेवा करना सफलता का मंत्र है, तो कोई कहता था कि लोगों की मदद करना सफलता का मंत्र है। लेकिन किसी का भी उत्तर उसे संतुष्ट नहीं कर पाता था। एक दिन जब वह अपने नगर की एक सड़क से गुजर रहा था, तो उसने एक साधु को देखा जिसे एक बहुत बड़ी भीड़ ने घेर रखा था। उस साधु को उसने पहले कभी अपने नगर में नहीं देखा था। साधु के बारे में पूछने पर पता चला कि वे साधु लोगों के प्रश्नों के बहुत सटीक उत्तर देते हैं, आज तक कोई भी व्यक्ति उनके उत्तर से असंतुष्ट नहीं हुआ है। सुन्दर की आँखों में चमक आ गई। उसने सोचा कि क्यों न साधु से अपने प्रश्न का उत्तर जाना जाए। अगर उन्होंने मुझे सफलता का मंत्र बता दिया तो मैं जरूर सफल हो जाऊँगा।

वह साधु के पास गया और उनसे पूछा, “साधु महाराज, मैं अपने जीवन में सफल होना चाहता हूँ, क्या आप मुझे सफलता का मंत्र बता सकते हैं ?” साधु के चेहरे पर मधुर मुस्कान आ गयी और उन्होंने कहा, “तुम्हारे इस प्रश्न के बारे में मैं तुम्हें अभी नहीं बताऊँगा। इस नगर में मुझे 10 दिन तक रुकना है। तुम कल आकर मुझसे मिलो।” अगले दिन साधु ने उसे एक बहुत बड़ी और मोटी किताब देते हुए कहा, “अगर तुम्हें सफलता का मंत्र जानना है तो इसके लिए तुम्हें इस किताब को पढ़ना होगा। इस किताब के किसी एक पृष्ठ पर सफलता का मंत्र दिया हुआ है। जैसे ही तुम उस पृष्ठ को पढ़ोगे, तो तुरंत तुम्हें वह मंत्र मिल जायेगा लेकिन शर्त यह है कि इस किताब को तुम शुरू से पढ़ोगे, यदि तुमने इसे कहीं बीच में से पढ़ा, तो वह मंत्र तुम्हें नहीं मिल पायेगा।”

सुन्दर किसी भी तरह सफलता का मंत्र जानना चाहता था। अतः उसने साधु की शर्त मान ली और तुरंत उस किताब को शुरू से पढ़ना प्रारम्भ कर दिया। वह जल्दी से जल्दी उस पृष्ठ पर पहुँचना चाहता था, जहाँ सफलता का मंत्र लिखा हुआ था। अतः उसने किताब को लगातार पढ़ना जारी रखा। कब रात हुई और कब दिन, उसे बिल्कुल भी ध्यान नहीं था। वह खाना और पीना तक भूल गया था। हर समय किताब पढ़ता रहता था। नींद बहुत सताती, तो कुछ देर सो जाता लेकिन उठते ही पढ़ने बैठ जाता। सात दिन बाद जब वह किताब के आखिरी पृष्ठ पर पहुँचा, तो उसे लगा कि यह तो किताब का आखिरी पृष्ठ है, यहाँ पर मुझे सफलता का मंत्र मिलना तय है लेकिन जब वह किताब की आखिरी लाइन पर पहुँचा तो उसमें लिखा था — “अगर तुम्हें सफलता का मंत्र जानना है, तो इस किताब के पिछले ‘कवर’ पृष्ठ की जिल्द हटा कर देखो।”

सुन्दर ने तुरंत पिछले 'कवर' पृष्ठ की जिल्द को हटाया, तो कुछ लाइनें वहाँ लिखी हुई थीं। उन्हें पढ़ते ही वह खुशी से उछलने लगा और चिल्लाने लगा, "मुझे सफलता का मंत्र मिल गया! मुझे सफलता का मंत्र मिल गया।" इतना कहकर वह फिर से उन लाइनों को पढ़ने लगा, जिनमें यह लिखा था — "जिस तरह तुमने इस किताब को पढ़ने के लिए अपने दिन और रात एक कर दिए, तुम्हें अपने खाने पीने का भी ध्यान नहीं रहा, हर समय सफलता का मंत्र खोजने के लिए लगातार किताब पढ़ते रहे, तुमने अपना हर पल इस किताब में सफलता का मंत्र ढूँढने में लगा दिया, किसी भी अन्य चीज के बारे में तुमने एक पल के लिए भी नहीं सोचा, लगातार उत्साह और लगन के साथ तुमने अपने प्रत्येक क्षण को मंत्र पाने में डुबो दिया। यदि इसी ललक और दृढ़इच्छा के साथ तुम दुनिया के किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करना चाहोगे, तो कोई भी तुम्हें सफल होने से नहीं रोक सकता।"

विवेकानंद जी ने भी हमें सफलता का मंत्र कुछ इस तरह बताया है — "अपना जीवन एक लक्ष्य पर निर्धारित करो। अपने पूरे शरीर को उस एक लक्ष्य से भर दो और हर दूसरे विचार को अपनी जिंदगी से निकाल दो। यही सफलता की कुंजी है।"

प्रश्न :—

- (i) सुन्दर किस चीज से घबराता था और क्यों ? उसकी एक अच्छी बात क्या थी ? [4]
- (ii) सुन्दर साधु के पास क्यों गया ? समझाकर लिखिए। [4]
- (iii) साधु ने सुन्दर को सफलता का मंत्र पाने के लिए क्या करने को कहा ? समझाकर लिखिए। [4]
- (iv) सुन्दर को सफलता का मंत्र कैसे मिला ? समझाकर लिखिए। [4]
- (v) इस गद्यांश से आपको क्या शिक्षा मिलती है ? [4]

3. (a) **Correct the following sentences and rewrite :—** [5]

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :—

- (i) ममता गाने की कसरत कर रही है।
- (ii) पिछले कुछ वर्षों के बीच भारत की आबादी बढ़ी है।
- (iii) अपने बुरे दुष्कर्मों के कारण वह आज कंगाल है।
- (iv) चोर सोमनाथ के घर पाँव दबाकर आया।
- (v) स्वार्थी मित्र काम निकलते ही आँखें नीची कर लेते हैं।

(b) **Use the following idioms in sentences of your own to illustrate their meaning :—** [5]

निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए इन्हें वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए :—

- (i) पापड़ बेलना।
- (ii) कंधे से कंधा मिलाना।
- (iii) पीठ दिखाना
- (iv) दाल में काला होना।
- (v) फूला न समाना।

## SECTION B

### PRESCRIBED TEXTBOOKS - 50 Marks

Answer four questions from this Section on at least three of the prescribed textbooks.

#### गद्य संकलन (Gadya Sanklan)

4. 'ये वे हाथ नहीं हो सकते, मैं मन में सोच रही थी, जो बच्चों को मीठी लोरी की थपकनें देकर सुलाते हैं, पति की कमीज में बटन टाँकते हैं या चिमटा-सनसी पकड़ते हैं।'
- (i) प्रस्तुत पंक्तियाँ किस पाठ से ली गई हैं ? इस पाठ की लेखिका कौन हैं ? उन्हें कहाँ से गाड़ी पकड़नी थी ? [1½]
- (ii) सफर में उस डिब्बे में कौन-कौन सी महिलाएँ थीं ? उनका परिचय अत्यन्त संक्षेप में दीजिए। [3]
- (iii) लेखिका ने उपर्युक्त कथन किस सन्दर्भ में कहा है ? [3]
- (iv) उपर्युक्त कथन जिस महिला के बारे में कहा गया है, वे कहाँ जा रही थीं और क्यों ? उनका कौन सा सामान उन्हें परेशान किए जा रहा था ? [5]
5. रज्जब कौन था ? उसका पेशा क्या था ? वह अपने पेशे से मिले धन को लेकर कहाँ जा रहा था ? क्या वह अपने गन्तव्य स्थल पर पहुँच सका ? यदि हाँ, तो कैसे ? 'शरणागत' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [12½]
6. 'क्या निराश हुआ जाए ?' निबन्ध में निबन्धकार का क्या उद्देश्य है ? किन दो घटनाओं के द्वारा निबन्धकार ने यह बताने का प्रयास किया है कि मनुष्यता अब भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है ? उन घटनाओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए। [12½]

#### काव्य मंजरी (Kavya Manjari)

7. भीतर जो डर रहा छिपाए,  
हाय ! वही बाहर आया।  
एक दिवस सुखिया के तन को  
ताप-तप्त मैंने पाया।  
ज्वर में विह्वल हो बोली वह,  
क्या जानूँ किस डर-से-डर,  
मुझको देवी के प्रसाद का,  
एक फूल ही दो लाकर।
- (i) 'मैंने' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ? उसे किस बात का डर था ? [1½]
- (ii) सुखिया का स्वभाव कैसा था ? उसके इस स्वभाव का क्या परिणाम निकला ? उसने किससे, क्या इच्छा जाहिर की ? [3]
- (iii) क्या सुखिया की इच्छा पूरी हो सकी ? कारण सहित लिखिए। [3]
- (iv) इस कविता में कवि ने किस बुराई को किस प्रकार उजागर किया है ? [5]

8. "बाल लीला" के आधार पर बताइए कि सूरदास जी ने श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप का कैसा वर्णन किया है ? श्रीकृष्ण अपने बड़े भाई बलराम की शिकायत किससे करते हैं और क्या शिकायत करते हैं ? [12½]
9. 'प्रकृति भाग्य-बल से नहीं, भुजबल से झुकती है।' — 'उद्यमी नर' कविता के आधार पर सिद्ध कीजिए। [12½]

### 'सारा आकाश' (Saara Akash)

10. "मुझे पता होता तो मैं कभी भी नहीं करती। मैंने समझा कि कोई सादा मिट्टी का ढेला है।"
- (i) प्रस्तुत पंक्तियों के वक्ता और श्रोता कौन-कौन हैं ? उनके बीच किस विषय पर चर्चा हो रही है ? [1½]
- (ii) वक्ता की बात सुनकर श्रोता ने गुस्से में क्या-क्या कहा ? [3]
- (iii) उक्त घटना के सन्दर्भ में समर की क्या प्रतिक्रिया थी ? [3]
- (iv) समर की आत्मग्लानि का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए। [5]
11. प्रभा के परदा न करने से परिवार में क्या प्रतिक्रिया हुई, उसका परदा न करना कहाँ तक उचित था, स्पष्ट कीजिए। [12½]
12. "सारा आकाश" उपन्यास के प्रमुख पात्र 'समर' का चरित्र-चित्रण कीजिए। [12½]

### 'आषाढ़ का एक दिन' (Aashad Ka Ek Din)

13. तुम जिसे भावना कहती हो वह केवल छलना और आत्म-प्रवंचना है। ---- भावना में भावना का वरण किया है! ---- मैं पूछती हूँ भावना में भावना का वरण क्या होता है ?
- (i) उक्त कथन नाटक के किस अंक से लिया गया है तथा उक्त कथन किसने, किससे कहा है ? [1½]
- (ii) उक्त कथन किस सन्दर्भ में कहा गया है ? स्पष्ट कीजिए। [3]
- (iii) उक्त कथन के माध्यम से वक्ता श्रोता को क्या समझाना चाहती हैं ? [3]
- (iv) वक्ता की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। [5]
14. 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के आधार पर कालिदास का चरित्र-चित्रण कीजिए। [12½]
15. 'आषाढ़ का एक दिन' शीर्षक नाटक ऐतिहासिक होते हुए भी आधुनिक समस्याओं का आंकलन प्रतीत होता है। — व्याख्या कीजिए। [12½]